आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2507 • उदयपुर, शुक्रवार 05 नवम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

दिव्यांगजनों की सेवा का अवसर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय – समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण जारी है।

ऐसा ही एक कृत्रिम अंग वितरण शिविर नारायण सेवा संस्थान के देहरादून आश्रम में संपन्न हुआ। इस शिविर में 29 दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग तथा 11 के लिये कैलीपर्स की सेवा हुई। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमती माला जी (प्रधान महोदया), अध्यक्ष श्री खेमचंदजी गुप्ता, विशिष्ट अतिथि श्री रमेश चंद जी गुप्ता, श्रीमती अनुसुईया नेगी, श्री सोहन जी कृपा करके पधारे।

टेक्नीशियन टीम में श्री नरेश जी वैष्णव व श्री किशन जी, शिविर टीम में श्री अखिलेश जी, श्री रमेश जी शर्मा व श्री मुन्ना सिंह जी ने सेवायें दीं। आश्रम प्रभारी श्री मुकेश जी जोशी का पूर्ण योगदान रहा।

संस्थान द्वारा दिव्यांग दम्पती व बच्चे की मदद

नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांग धर्माराम (13) और रमेश मीणा (28) को उनकी विपरीत परिस्थितियों में तात्कालिक मदद पहुँचाई है। कानोड़ तहसील जिला उदयपुर (राज.) के तालाब फलां निवासी रमेश पुत्र वाला मीणा का घर आग लगने से स्वाह हो गया था। संस्थान ने अनाज, वस्त्र, कम्बल मसाले आदि देकर उसकी मदद की। रमेश और उसकी पत्नी लोगरी दोनों ही जन्मजात दिव्यांग है। चार बच्चों के साथ गृहस्थी को चलाना, पहले से ही इसके लिए भारी था और अब घर के जल जाने से उस पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा है। वहीं मंगलवार को पीआरओ विपुल शर्मा को फुटपाथ पर मिले धर्मा पुत्र कंवरलाल को व्हीलचेयर, कपड़े, बिस्किट एवं राशन देने के साथ उसका सीपी टेस्ट करवाया। इस बालक की दो वर्ष पूर्व बीमारी के दौरान आवाज और आंखों की रोशनी चली गई थी। अब इसके पांव भी नाकाम हो गए है। डॉक्टर्स टीम आवश्यक चिकित्सा के लिए प्रयासरत हैं। संस्थान निदेशक वंदना जी अग्रवाल ने कहा कि विषमता में परेशान दिव्यांगों एवं दुखियों को ज्यादा से ज्यादा मदद पहुंचाने के लिए संस्थान तत्पर है। इस अवसर पर विष्णु जी शर्मा हितैषी, भगवान प्रसाद जी गौड़, दिलीप सिंह जी, फतेहलाल जी मौजूद रहे।

मासूम को संभाला व मदद भी की

बांसवाड़ा जिले के टामटिया गांव की बालिका के कैन्सर रोग के उपचार के लिए नारायण सेवा संस्थान ने आर्थिक सम्बल प्रदान किया है। अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने बताया कि आदिवासी श्रमिक धन्ना कटारा की 6 साल की बेटी राधिका यहां गीताजंली हॉस्पीटल में भर्ती है। दिन–ब–दिन गिरते स्वास्थ्य के चलते जांच पर कैन्सर होना पाया गया। संस्थान निदेशक वंदना जी अग्रवाल हॉस्पीटल गई और आर्थिक सहयोग देते हुए उपचार होने तक राशन, भोजन, एम्बुलेंस व वस्त्रादि की व्यवस्था का भी भरोसा दिलाया।

मदद को तरसती पत्नी और मासूमों को नारायण सेवा ने संभाला

उदयपुर जिले के आदिवासी बहुल जोर जी का खेड़ा निवासी मीना (बदला हुआ नाम) का पति अहमदाबाद में नमकीन की दुकान पर काम करता था। खराब तबीयत के चलते वो गांव आया और दो दिन बाद मृत्यु हो गई। एक तरफ पत्नी पति की मौत से दुःखी थी तो दूसरी तरफ तीन बेटियों और वृद्ध सासु माँ की चिंता सता रही थीं। असमय मौत से असहाय हुए परिवार के घर में न आटा है न दाल न ही राशन।

भोजन को मोहताज परिवार पर ताऊते तूफान का कहर भी ऐसा बरपा कि टूटी–फूटी छत ही उड़ गई। परिवार के पांचों जन ने बारिश में भीगकर रातें गुजारी तो अब तेज धूप में तपने को मजबूर है।

नारायण सेवा संस्थान ने ली सुध– संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि आदिवासी क्षेत्रों में राशन बांटने वाली टीम को पता चला तो वे वहाँ पहुंचे। दुःखी परिवार को ढांढस बंधाया और मदद के लिये आगे आये।

हर माह मिलेगा राशन– मृतक मजदूर परिवार को संस्थान ने मौके पर ही महीने भर का आटा, चावल, तेल, शक्कर, चाय, दाल और मसाले दिए। हर माह परिवार का पेट भरने को राशन दिया जाता रहेगा।

संस्थान बनाएगा पक्की छत – बारिश, धूप और गर्मी झेल रहे परिवार की समस्या निदान के लिए पक्की छत का निर्माण संस्थान द्वारा करवाया जाएगा।

तीनों बेटियों को पढ़ाने में भी मदद– संस्थान ने मृतक मजदूर के परिवार को भरोसा दिलाया कि इन बेटियों को पढ़ाने में पूरी मदद की जाएगी।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में निहित है दिव्यांगजनों की प्रगति की कुंजी

— प्रशान्त अग्रवाल

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस डेटा साइंस का एक ऐसा क्षेत्र है, जिसने हाल के वर्षों में सभी कारोबारों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एआई या आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक डेटा साइंस फंक्शन है जो कंप्यूटर को अनुभवों के माध्यम से सीखने और अपने स्वयं के स्तर पर ऐसे कार्य करने के लिए प्रशिक्षित करता है, जिन्हें कुछ इनपुट्स के साथ बेहतर तरीके से किया जा सकता है। ग्राहकों से संपर्क में सहायता के लिए उपयोग किए जाने वाले चौटबॉट्स से लेकर अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तक एक लंबा सफर तय किया गया है और कहा जा सकता है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक ऐसे शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरा है, जिसने पूरी दुनिया में कारोबार करने के तौर–तरीकों को बदल दिया है और इसीलिए आज पारस्परिक संपर्क के लिए दुनियाभर के व्यवसायों और सेवाओं में इसका इस्तेमाल किया जाता है। दरअसल एआई एक उपकरण है जो एआई पेशेवरों द्वारा फीड किए गए डेटा के माध्यम से विशिष्ट कार्यों को करने के लिए डेटा पैटर्न को पहचानता है। हाल के दिनों में जहां नई टैक्नोलॉजी बहुत कम समय में उन्नत हो रही हैं, वहीं आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की अवधारणा का उपयोग विभिन्न कॉरपोरेट्स द्वारा ऐसी सहायक तकनीकों के निर्माण के लिए किया गया है, जो कि दिव्यांग जनों के लिए उपयोगी साबित हो सकती हैं।

एआई को अपनाने से अर्थव्यवस्थाओं में सीधे तौर पर व्यापक परिवर्तन नजर आ रहा है, साथ ही क्षमताओं का निर्माण करने के लिए भी एआई का उपयोग किया गया है। गार्टनर द्वारा हाल ही में जारी किए गए अध्ययन के अनुसार यह भविष्यवाणी की गई है कि वर्तमान में प्रबंधकों द्वारा किया जा रहा 69 प्रतिशत कार्य 2024 तक पूरी तरह से स्वचालित हो जाएगा। भारत सरकार को भी समावेशी विकास के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) में भरपूर संभावनाएं नजर आ रही हैं।

यही कारण है कि सरकार ने एआई पर एक टास्क फोर्स की स्थापना की है और नीति आयोग को निर्देश दिए हैं कि वह एआई को लेकर एक राष्ट्रीय रणनीति तैयार करे। देश अपनी 4.0 औद्योगिक क्रांति में अपने एआई समाधानों के माध्यम से प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्रदान करना चाहता है जो अतिरिक्त लागत लाभ के साथ उत्पादकता बढ़ा सकते हैं। इस तरह व्यवसायों को श्रम की तुलना में थोड़ा अधिक लागत उत्पादक और लाभदायक बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इस प्रकार हमारा देश क्षमताओं का निर्माण करके डिजिटल दुनिया में व्याप्त वैश्विक विभाजन को कम करने की पूरी कोशिश कर रहा है।

नीति आयोग द्वारा प्रकाशित एक हालिया लेख के अनुसार भारत का शिक्षा जगत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तकनीक को अपनाने के लिए पूरी तरह तैयार है। लेख में कहा गया है कि वर्ष 2030 तक दुनिया में सबसे अधिक युवा लोग हमारे देश में होंगे। इस दौर में एआई का उपयोग दिव्यांग लोगों के लिए भी फायदेमंद साबित हुआ है, क्योंकि अधिक से अधिक संगठन एआई को अपना रहे हैं और वे दिव्यांग लोगों को भर्ती करने के लिए तत्पर हैं, जो उन्हें परिवर्तनों के लिए अधिक अनुकूल बनाते हैं। एक तरह से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कार्यस्थलों पर विविधता को बढ़ावा देता रहा है। गार्टनर की रिपोर्ट बताती है कि संगठनों से जुड़े 75 प्रतिशत प्रमुखों को कुशल प्रतिभा की कमी का सामना करना पड़ रहा है। चूंकि प्रतिभाशाली दिव्यांग जनों की प्रतिभा का अभी पूरी तरह इस्तेमाल नहीं हो पाया है, ऐसे में अधिकांश संगठन अब एआई के साथ खुद को लैस कर रहे हैं ताकि इन दिव्यांग उम्मीदवारों को स्किलिंग और प्रशिक्षण प्रदान करके उन्हें और भी अधिक सक्षम बनाया जा सके और उनकी प्रतिभा का उपयोग हो सके। इस तरह कार्यस्थल में भी विविधता नजर आने लगी है, जहां अब बड़े संगठनों द्वारा भी दिव्यांग जनों को स्वीकार किया जाने लगा है।

गार्टनर की रिपोर्ट में आगे विस्तार से बताया गया है कि 2023 तक नौकरी करने वाले दिव्यांग जनों की संख्या आज की तुलना में तीन गुना हो जाएगी, क्योंकि एआई की सहायता से कार्यस्थल की बाधाओं को कम किया जा सकेगा। गार्टनर का अनुमान है कि दिव्यांग लोगों को सक्रिय रूप से नियुक्त करने वाले संगठनों में कर्मचारियों के कायम रहने की दर 89 प्रतिशत रही है और इसके साथ ही कर्मचारी उत्पादकता में 72 प्रतिशत और संगठन की लाभप्रदता में 29 फीसदी की वृद्धि हुई है।

एआई ने दिव्यांग जनों के लिए कई विकल्प खोले हैं, जिससे उनके लिए कार्यस्थल में अधिक समावेशिता को जोड़ा जा सका है। दिव्यांग लोगों के लिए हाल के दौर में सामने आए कुछ और दिलचस्प विकल्पों में एक विकल्प है रेस्तरां का कारोबार, जहां वर्चुअल रियलिटी और ब्रेल को लागू करते हुए दिव्यांगों के लिए नए अवसरों का सृजन किया गया है। कई संगठनों ने अपने यहां सक्रिय रूप से एआई रोबोटिक्स टैक्नोलॉजी को लागू किया है, जिसमें दिव्यांग जनों द्वारा रोबोटिक्स को नियंत्रित किया जाता है और वे ही उसका रख–रखाव भी करते हैं।

इधर जबकि एआई के माध्यम से दिव्यांग जनों के लिए नए विकल्पों को विकसित किया जा रहा है, दूसरी तरफ एक्सेंचर की 'रीवायर फॉर ग्रोथ' शीर्षक वाली रिपोर्ट में कहा गया है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के माध्यम से वर्ष 2035 तक देश की अर्थव्यवस्था में लगभग 957 बिलियन डॉलर जोड़ने की क्षमता है। समग्र रूप में एआई में वह क्षमता है जो मशीन लर्निंग के साथ इन्फ्रास्ट्रक्चरल ग्रोथ के माध्यम से अनेक कारोबारों के लिए फायदेमंद साबित हो सकती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डीप लर्निंग नेत्र विज्ञान के क्षेत्र में भी फायदेमंद साबित होगी। यह टैक्नीक स्क्रीनडायबेटिक रेटिनोपैथी (डीआर) और रेटिनोपैथी ऑफ प्रीमैच्योरिटी (आरओपी) के लिए भी फायदेमंद होगी।

एआई ने कैरियर के अनेक ऐसे नए विकल्पों को खोलने में भी मदद की है, जहां सहायक तकनीक जैसे रीयल टाइम टैक्स्ट टू स्पीच और टैक्स्ट ट्रांसलेशन सिस्टम का उपयोग शिक्षकों द्वारा अपने छात्रों को प्रशिक्षित करने के लिए किया जाता है। इनका उपयोग क्षेषीय भाषाओं में मूल रूप से सूचना का प्रसार करने के लिए किया गया है जो वास्तव में दिव्यांग जनों के कौशल के लिए बनाए गए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के ड्राट के अनुरूप है। एआई तकनीक में एक और विकास बायोमेट्रिक ऑथेंटिकेशन से संबंधित है, जिसका उपयोग छात्रों और शिक्षकों दोनों की उपस्थिति को दर्ज करने के लिए किया जाता है। इस तरह यह तकनीक कर्मचारियों की उपस्थिति और अन्य प्रशासनिक कार्यों को रिकॉर्ड करने के लिए फायदेमंद साबित हुई है। बॉयोमीट्रिक अटेंडेंस शिक्षकों और युवाओं दोनों की उपस्थिति के अनुपात को चिह्नित करने के लिए भी फायदेमंद साबित हुई है और इस तकनीक के माध्यम से उच्च शिक्षा के लिए पुरुष–महिला नामांकन के अनुपात की सटीक जानकारी मिल सकती है। छात्रों की शंकाओं और उनके सवालों के जवाब देने के लिए चौटबॉट्स का उपयोग किया जा रहा है, जिन्हें दरअसल विषय विशेषज्ञों ने तैयार किया है।

नीति आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग का इस्तेमाल दीक्षा, ई–पाठशाला और स्वयंम (स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव लर्निंग फॉर यंग एस्पायरिंग माइंड्स) जैसे प्लेटफार्मों पर बड़े पैमाने पर आकलन के स्वचालित ग्रेडिंग के लिए किया जा सकता है। इसमें सिर्फ वस्तुनिष्ठ प्रश्न ही नहीं, वर्णनात्मक सवालों को भी शामिल किया जा सकता है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि शिक्षा क्षेत्र ने एआई के इस्तेमाल के साथ ही दिव्यांग जनों के लिए अनेक नए विकल्प खोल दिए हैं। इस राह में अनेक बाधाएं भी सामने आ सकती हैं, लेकिन निश्चित रूप से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तकनीक सभी क्षेत्रों में नए अवसरों का सृजन करेगी, खास तौर पर शिक्षा के क्षेत्र में जहां दिव्यांग जनों के लिए यह तकनीक बेहत फायदेमंद साबित हो सकती है।

संस्थान की आगामी पांच वर्ष : योजना

1,40,400 शल्य चिकित्सा

संस्थान द्वारा किये जाने वाले ऑपरेशन में 15 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि का लक्ष्य।

1,87,200 सहायक उपकरण निर्माण एवं वितरण

25 प्रतिशत सहायक उपकरण निर्माण एवं वितरण ज्यादा होगा।

46,800 कृत्रिम अंग निर्माण एवं वितरण

10 प्रतिशत कृत्रिम अंग ज्यादा बनायेंगे।

510 दिव्यांग जोड़ों की बसेगी गृहस्थी

सन 2026 तक 10 सामूहिक विवाह समारोह का होगा आयोजन।

250 एनजीओ को लेंगे गोद

प्रतिवर्ष 50 छोटी एनजीओ को देंगे आर्थिक मदद।

एनसीए होगा उच्च माध्यमिक में क्रमोन्नत

सन 2026 में प्रतिवर्ष 1000 निर्धन एवं आदिवासी बच्चे पढ़ेंगे।

22,46,400 रोगियों की निःशुल्क फिजियोथैरेपी चिकित्सा

25 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि की जायेगी।

निःशुल्क मोबाईल रिपेयरिंग, सिलाई, कम्प्युटर एवं फिजियोथेरेपी केन्द्र का शुभारम्भ

2026 के अंत तक संस्थान 82-82 अतिरिक्त केन्द्रों का संचालन करेगा।

सम्पूर्ण भारत में 62 पी एण्ड ओ वर्कशॉप केन्द्र का शुभारम्भ

2026 के अंत तक 62 केन्द्रों का अतिरिक्त संचालन किया जायेगा।

सम्पादकीय

गोवर्धन पूजा वस्तुतः इन्द्र के अहंकार को दमन करके उसकी महत्वाकांक्षाओं का शमन करने का त्योहार है। छप्पन भोग का प्रचलन भी इसी घटना के बाद से माना जाता है। हम प्रकृति के सहारे ही अपना जीवन व्यतीत करते हैं तो प्रकृति की ही पूजा क्यों न करें यह संदेश देने के लिए ही गोवर्धन पर्वत धारण करने का प्रसंग बना।

कई क्षेत्रों में दीपावली के दूसरे दिन से नया वर्ष मानने की परंपरा है। विशेष रुप से प्राचीन काल में व्यापारी बहियों का पूजन कर आज से ही नयी बही में लेखा–जोखा प्रांरभ करते थे।

ग्रामीण क्षेत्रों में गोवंश की पूजा का भी प्रचलन है। बैलों व गायों को नहला–धुलाकर उनका शृंगार किया जाता है तथा उन्हें रंगों द्वारा भी रंगा जाता है। सायंकाल उनकी पूजा करके उन्हें लपसी खिलाने की भी प्रथा है। वस्तुतः हर त्योहार जनजीवन व प्रकृति से आबद्ध रहा है, इसलिए जनोपयोगी रस्में स्वभावत : उनमें जुड़ी हैं। हर्ष व उल्लास का पंच दिवसीय दीपोत्सव का यह चौथा दिन अपने आप में अति महत्वपूर्ण है।

कुछ काव्यमय

उमंग और उत्साह से
त्योहारों की महत्ता है।
जनजीवन में
परमात्मा के साथ–साथ
प्रकृति की भी सत्ता है।
प्रकृति से शुरु होकर
परमात्मा तक जाना है।
हर युग में, विधि चाहे बदले
पर मानव ने यही ठाना है।

- वरदीचन्द राव

कोरोना ने छीना, संस्थान ने दिया सहारा

उदयपुर जिले की वल्लभनगर तहसील के अमरपुरा खालसा के खेड़ा गांव के बुजुर्ग गरीब किसान श्री भगवानलाल के पुत्र का कोरोना की दूसरी लहर में दो माह पूर्व लम्बे इलाज के बाद देहांत हो गया।

एक निजी चिकित्सालय में 20 दिन चले इलाज में जमापूंजी तो खत्म हुई ही, कर्ज का भार भी बढ़ गया। घर में वही कमाने वाला था। अब परिवार को चलाने का बोझ मृतक के बूढे मां–बाप के कंधों पर आ गया। बूढ़ी मां पाव में फ्रेक्चर होने से चलने–फिरने में तो असमर्थ है ही, साथ ही बेटे की मौत के सदमे से भी अभी तक उबर नहीं पाई है।

संस्थान को इस बुजुर्ग दम्पती की विपत्ति के बारे में सूचना मिलने पर संस्थान निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल के साथ राहत टीम 5 जुलाई को बुजुर्ग के घर पहुंची और उन्हें राशन सामग्री एवं वस्त्रादि की सहायता के साथ ही आगे भी जरूरत के अनुसार सहयोग का आश्वासन दिया।

समावेशी और समान शिक्षा का अभियान

राज्य सरकार के निर्देशों के बाद अक्टूबर 2021 से नारायण चिल्ड्रन एकेडमी में करीब डेढ़ वर्ष बाद फिर से बच्चों की चहल–पहल शुरू हो गई है। न केवल बच्चों के अपितु उनके अभिभावकों के चेहरों पर भी मुसकान है। कोविड–19 के चलते एकेडमी पिछले डेढ़ वर्ष से बंद थी किंतु बच्चों के भविष्य को देखते हुए संस्थान ने 'घर से ही सीखें' अभियान के तहत शिक्षा की क्रमबद्धता को नियमित रखा।

नारायण चिल्ड्रन एकेडमी व वंचित बच्चों को मुफ्त अत्याधुनिक शिक्षा देने वाला एक चैरेटी स्कूल है। जहां किताबे, स्टेशनरी, पोषक, अल्पाहार, भोजन आदि की सुविधाएं भी निःशुल्क हैं। बड़ी ग्राम स्थित हरी–भरी पहाड़ियों की गोद में स्थित संस्थान के सेवामहातीर्थ परिसर में यह विद्यालय अवस्थित है, जहां अनुभवी एवं प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा शिक्षा दी जाती है। इसका मुख्य उद्देश्य कमजोर तबके के बालकों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 पर आधारित यह स्कूल वर्तमान में प्राथमिक स्तर का है। जिसे भविष्य में सी.बी.एस. ई में कक्षा 12वीं तक अपग्रेड करने की योजना है।

निराश जिन्दगी में उम्मीद की ज्योति

राजस्थान की भारत–पाक सीमा के मरुस्थलीय जिले बाड़मेर के छोटे से गांव भाड़खा निवासी लुणाराम (55) दुर्घटना मे गंभीर रूप से जख्मी होने व एक पांव खो देने के बाद जीने की उम्मीद ही खो चुके थे।

21 मार्च 2020 की शाम लुणाराम और उनका मित्र भाड़खा से अपने गांव नाइयों की ढाणी मोटरसाइकिल से जा रहे थे, तभी सामने से आती अनियन्त्रित पिकअप ने मोटरसाइकिल को चपेट में ले लिया। भिड़न्त इतनी भयंकर थी कि मोटरसाइकिल और दोनों सवार उछलकर 20 फीट दूर जा गिरे। साथी मित्र ने हिम्मत करके परिजनों को दुघर्टना की सूचना दी। एक निजी वाहन से उन्हें बाड़मेर के माणक हॉस्पीटल पहुंचाया गया, जहां 56 दिन तक भर्ती रख दुर्घटनाग्रस्त पांव में रॉड डाली गई। फिर भी पांव से पस निकलना न रूका। दर्द असहनीय था।

उन्हें कई अन्य बड़े हॉस्टपीटल में दिखाया गया, फिर भी राहत नहीं मिली। अन्त में जोधपुर के सरकारी अस्पताल में एडमिट कराया गया। जहां 15 दिनों के इलाज के बाद पांव काटना पड़ा। घाव सूखने का नाम नहीं ले रहा था। तब अहमदाबाद में इलाज करवाने पर राहत मिली।

पिछले 3 माह से घर में बिस्तर पर रहे। इस दौरान उनके आगरा निवासी पुराने मित्र ने फोन पर बताया कि नारायण सेवा संस्थान जाओ। बिना देर किए पिता–पुत्र 1 जुलाई को उदयपुर आए।

डॉ. मानस रंजन साहू ने पांव की स्थिति देखकर नाप लिया और कृत्रिम पैर लगा दिया। पैर लगने के बाद जीवन से अंधेरा छटा और उससे चलने पर उनमें जीने की उम्मीद की ज्योति जगी है। उन्होंने संस्थान का धन्यवाद अर्पित किया है।

परम ज्ञान

एक बौद्ध ब्रह्मचारी ने कई देशों में घूमकर विभिन्न कलाएं सीखीं। एक देश में उसने एक व्यक्ति से बाण बनाने की कला सीखी। कुछ दिनों बाद वह अन्य देश गया। वहां उसने नौ कलाएं सीखीं क्योंकि वहां बहुतायत में जहाज बनाए जाते थे।

फिर वह किसी तीसरे देश में गया, तो कई ऐसे व्यक्तियों के सम्पर्क में आया, जो गृह निर्माण करते थे। यहां उसने गृह निर्माण कला सीखी। इस प्रकार वह सोलह देशों में गया और कई कलाओं का ज्ञाता होकर लौटा। जब वह अपने देश पहुंचा तो अहंकार ग्रस्त हो लोगों से पूछता – 'इस सम्पूर्ण पृथ्वी पर मुझ जैसा चतुर व्यक्ति है ?'

भगवान बुद्ध ने उस युवा ब्रह्मचारी के घमंड की ऐसी अति देखकर उसे एक उच्चतर कला सिखानी चाही। वे एक वृद्ध भिखारी का वेश बनाकर हाथ में भिक्षापात्र लिए उसके सामने गए।

ब्रह्मचारी ने बड़े अभिमान से पूछा– 'कौन हो तुम?' बुद्ध बोले– 'मैं आत्मविजय का पथिक हूं।' ब्रह्मचारी ने उनके कथन का अर्थ जानना चाहा तो वे बोले–'जो बाण बना लेता है, नौचालक जहाज पर नियंत्रण रख लेता है, गृह निर्माता घर भी बना लेता है, किन्तु वह तो महाविद्वान ही होगा, जो अपने शरीर और मन पर विजय पा सके, संसार की प्रशंसा व अपशब्द दोनों ही दशाओं में जिसका मन स्थिर रहे, शांति व निर्वाण को प्राप्त करता है।' गौतम बुद्ध की इन बातों को सुनकर ब्रह्मचारी को अपनी भूल का अहसास हुआ।

वस्तुतः अहंकार का त्याग ही ईश उपलब्धि का द्वार है, इसलिए ईश्वर की प्राप्ति के इच्छुक भक्त को अहंकार से सर्वथा मुक्त रहना चाहिए।

हटा राह का रोड़ा

रेल से कटे दोनों पांव, नारायण सेवा ने फिर चला दिया

कोरबा (छत्तीसगढ़) जिले के गांव केराकछार निवासी लम्बोहर कुमार एक बोरवेल कंपनी में काम करते हुए अपने परिवार के साथ खुश थे कि एकाएक जिंदगी की राह में रोड़ा खड़ा हो गया। वे अपने साथ घटी पूरी घटना का जिक्र करते हुए बताते हैं कि किसी काम से वे गांव से बिलासपुर जा रहे थे। रेलवे स्टेशन पर पटरी पार करते समय गिर पड़े और अचानक आई ट्रेन ने उनके दोनों पांव छीन लिए।

घटना ने परिवार को गहरे संकट में डाल दिया। इलाज में पैसा खर्च हो गया और काम–धंधा छोड़कर घर बैठना पड़ा। कुछ समय बीतने पर उनके एक मित्र पप्पू कुमार ने बताया कि उदयपुर में नारायण सेवा संस्थान निःशुल्क कृत्रिम पैर लगाती है।

इस समाचार से उम्मीद की किरण दिखाई दी। वे पिता तीजराम के साथ उदयपुर पहुंचे। जहां उनके दोनों कटे पांव का नाप लेकर कृत्रिम पैर बनाए गए। अब मैं उन पैरों के सहारे आराम से चलता हूं और आजीविका से जुड़कर परिवार के पोषण में मदद भी कर रहा हूँ। नारायण सेवा संस्थान का बहुत–बहुत आभार।

स्वस्थ रहने के उपाय

हमेशा पानी को घूंट–घूंट करके चबाते हुए पीएं और खाने को इतना चबायें कि पानी बन जाये। किसी ऋषि ने कहा है कि ''खाने को पियो और पीने को खाओ''।

खाने के 40 मिनट पहले और 60 – 90 मिनट के बाद पानी पीयें और फ्रीज का ठंडा पानी, बर्फ डाला हुआ पानी जीवन में कभी भी नहीं पीयें। गुनगुना या मिट्टी के घड़े का पानी ही पीयें।

सुबह जगने के बाद बिना कुल्ला करे 2 से 3 गिलास पानी सुखासन में बैठकर पानी घूंट–घूंट करके पीये यानी उषा पान करें।

खाने के साथ भी कभी पानी न पीयें। जरुरत पड़े तो सुबह ताजा फल का रस, दोपहर में छाछ और रात्रि में गर्म दूध का उपयोग कर सकते हैं।

भोजन हमेशा सुखासन में बैठकर करें और ध्यान खाने पर ही रहे, मतलब टेलीविजन देखते, गाने सुनते हुए, पढ़ते हुए, बातचीत करते हुए कभी भी भोजन न करें।

हमेशा बैठ कर खाना खायें और पानी पियें। अगर संभव हो तो सुखासन, सिद्धासन में बैठ कर ही खाना खायें।

फ्रीज में रखा हुआ भोजन न करें या उसे साधारण तापमान में आने पर ही खायें दुबारा कभी भी गर्म ना करें।

गूँथ कर रखे हुये आटे की रोटी कभी न खायें, जैसे– कुछ लोग सुबह में ही आटा गूँथ कर रख देते हैं और शाम को उसी से बनी हुई चपाती खा लेते हैं जो स्वास्थ के लिए हानिकारक है। ताजा बनाएं ताजा खायें।

खाना खाने के तुरंत बाद पेशाब जरूर करें ऐसा करने से डायबिटिज होने की सम्भावना कम होती है। मौसम पर आने वाले फल, और सब्जियाँ ही उत्तम है इसलिए बिना मौसम वाली सब्जियाँ या फल न खायें।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्साक से सलाह अवश्य लें।)

मोहित चलेगा अब अपने पैरों पर

आशा पांडे नालंदा बिहार के निकट छोटे से गांव की रहने वाली है । 4 बच्चों की मां आशा के जीवन में सबसे भारी दुःख था कि उसका बड़ा बेटा मोहित दोनों पैरो से लाचार था क्योंकि आशा का विवाह एक बेहद पिछड़े गांव में हुआ जहां बच्चों के लिए स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी मूलभूत आवश्यकता मुहैया करा पाना कठिन था। ऐसे में फिर भला वह अपने निशक्त बेटे को किस तरह शिक्षित कर पाती।

आशा के पति श्रवण पांडे पटना के एक निजी स्कूल में अध्यापक और वहीं पर रहते हैं। आशा ने भी ठान लिया कि वह भी पति के साथ शहर में ही रहेगी और कोई भी नौकरी करके अपने बच्चों को अच्छी परवरिश और शिक्षा देगी। हालांकि आशा ने सिर्फ हाई स्कूल तक की पढ़ाई की है लेकिन फिर भी उसने एक निजी प्राइमरी स्कूल में अध्यापिका की नौकरी ढूंढ ली और उसी स्कूल में अपने बेटे मोहित का भी एडमिशन करवा दिया। अब आशा चाहती थी कि किसी तरह उसके बच्चे का इलाज हो जाए और नारायण सेवा संस्थान की निशुल्क पोलियो करेक्शन चिकित्सा के बारे में पता चला तो वह तुरंत उसे उदयपुर ले आई। हालांकि उसका पति नहीं चाहते थे कि वह मोहित को संस्थान ले जाए क्योंकि उन्हें लगता था कि यह बच्चा वहां जाकर भी नहीं ठीक हो पाएगा। लाचार जीवन जीना उसकी नियति है।

लेकिन तमाम विरोध के बावजूद मां के मन में किसी कोने में अपने बेटे के ठीक होने की उम्मीद लेकर नारायण सेवा संस्थान आ गई जहां मोहित के दोनों पांव का ऑपरेशन हो चुका है। इस मां के मन में पूर्ण विश्वास है कि बहुत जल्द उसका मोहित अपने पांव पर चलेगा और बेटे के सुखद भविष्य के लिए किया गया उसका संघर्ष सफल होगा।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें

मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

आपके अपने संस्थान का पता

नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से

संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पैन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर – 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023